नं. 1

संजीव® बुक्स

हिन्दी साहित्य-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2025 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा जारी प्रश्न बैंक के प्रश्नों का हल सहित समावेश
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2026

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 360/-

- प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

जयपुर–3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 360.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

आधुनिक बुक बाईन्डर, जयपुर

★★★★★★

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य–कक्षा-12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न-पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	**अंक**
अपठित बोध	12
रचना	13
काव्यांग परिचय	10
पाठ्यपुस्तक : **अन्तरा** भाग-2	32
पाठ्यपुस्तक : **अन्तराल** भाग-2	13

अंक

अपठित बोध : 12

1. अपठित काव्यांश (तीन बहुचयनात्मक एवं तीन अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6
2. अपठित गद्यांश (तीन बहुचयनात्मक एवं तीन अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6

रचना–अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित– 13

1. कविता, नाटक, कहानी की रचना (दो बहुचयनात्मक एवं दो अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 4
2. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया (दो बहुचयनात्मक एवं दो अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 4
3. नये और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन (300 शब्द) (विकल्प सहित) 5

काव्यांग परिचय 10 अंक

(छः रिक्त स्थानों की पूर्ति के प्रश्न, दो अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न)

1. काव्य-गुण, काव्य दोष 3
2. छन्द—गीतिका, हरिगीतिका, छप्पय, कुण्डलिया, द्रुतविलम्बित, वंशस्थ, कवित्त, सवैया 3
3. अलंकार—अन्योक्ति, समासोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति, दृष्टांत, प्रतीप, मानवीकरण, व्यतिरेक 4

पाठ्यपुस्तक–अन्तरा भाग-2 **32**

1. सप्रसंग व्याख्या (गद्य + पद्य) (विकल्प सहित) 10
2. कवि/लेखक परिचय (दो लघूत्तरात्मक प्रश्न, कवि तथा लेखक का साहित्यिक परिचय) (प्रत्येक 40 शब्दों में उत्तर) 4
3. प्रश्नोत्तर गद्य भाग से (दो बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित एक दीर्घ-उत्तरात्मक प्रश्न-60 शब्दों में उत्तर) 9
4. प्रश्नोत्तर पद्य भाग से (दो बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित एक दीर्घ-उत्तरात्मक प्रश्न-60 शब्दों में उत्तर) 9

पाठ्यपुस्तक–अन्तराल भाग-2 **13**

1. एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (60 शब्दों में उत्तर) 3
2. चार बहुचयनात्मक एवं तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न–प्रत्येक 40 शब्दों में उत्तर 10

निर्धारित पुस्तकें–

1. **अन्तरा-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **अन्तराल-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति एवं माध्यम**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

अन्तरा भाग 2

पद्य खण्ड

1. जयशंकर प्रसाद 1-11
2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 12-22
3. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' 22-33
4. केदारनाथ सिंह 33-46
5. रघुवीर सहाय 46-57
6. तुलसीदास 56-68
7. मलिक मुहम्मद जायसी 68-79
8. विद्यापति 79-89
9. घनानंद 89-95

गद्य खण्ड

1. प्रेमघन की छाया-स्मृति - रामचंद्र शुक्ल 96-107
2. सुमिरिनी के मनके - पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी 107-121
3. संवदिया - फणीश्वरनाथ 'रेणु' 122-135
4. गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात - भीष्म साहनी 135-147
5. लघु कथाएँ - असगर वजाहत 147-158
6. जहाँ कोई वापसी नहीं - निर्मल वर्मा 158-173
7. दूसरा देवदास - ममता कालिया 173-188
8. कुटज - हजारी प्रसाद द्विवेदी 188-203

अन्तराल भाग 2

1. सूरदास की झोंपड़ी (प्रेमचंद) 204-214
2. बिस्कोहर की माटी (विश्वनाथ त्रिपाठी) 214-223
3. अपना मालवा-खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में (प्रभाष जोशी) 223-233

अपठित बोध

1. अपठित काव्यांश 234-260
2. अपठित गद्यांश 260-281

रचना

(अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित)

1.	**कविता/नाटक/कहानी की रचना**	**282–292**
2.	**पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया**	**293–302**
3.	**नये और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन–**	**303–340**
	1. झरोखे से बाहर	303
	2. सावन की पहली झड़ी	304
	3. इम्तहान के दिन	304
	4. दीया और तूफान	305
	5. 'मेरे मुहल्ले का चौराहा'	305
	6. मेरा प्रिय टाइम पास	306
	7. एक कामकाजी औरत की शाम	306
	8. घर से स्कूल तक सफर के अनुभव	307
	9. किसी खास दिन पर लगने वाला हाट बाजार	307
	10. स्वतन्त्रता की खोज	308
	11. स्मार्ट सिटी मिशन	308
	12. शिक्षा की पुनर्व्यवस्था	309
	13. प्रकृति और मानव	309
	14. समय का सवाल	310
	15. डिजिटल दनिया में बोए हुए : तकनीक के प्रभाव	310
	16. साइबर अपराध के बढ़ते कदम अथवा सूचना प्रौद्योगिकी मेमं बढ़ते अपराध	311
	17. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) वरदान या अभिशाप	311
	18. राजस्थान में लोक जीवन	312
	19. समाज एवं नारी सशक्तिकरण	312
	20. पर्यावरण संरक्षण में नागरिक कर्त्तव्य	313
	21. हमारा स्वास्थ्य और भोजन	313
	22. जीवन में नैतिक मूल्यों का महत्त्व	314
	23. स्वावलम्बन अथवा स्वावलम्बन का महत्त्व	314

24. कामकाजी महिला और राष्ट्र निर्माण 315
25. योग और विद्यार्थी जीवन 315
26. बढ़ती तकनीक : सुविधा या समस्या 316
27. प्राकृतिक आपदाएँ : कारण और निवारण 316
28. यदि मैं शिक्षा-मन्त्री होता 317
29. दैनिक जीवन में विज्ञान 318
30. कोरोना काल और शिक्षा 318
31. यदि मैं प्रधानाचार्य होता 319
32. मेक इन इण्डिया
अथवा
स्वदेशी उद्योग 319
33. आत्मनिर्भर भारत 320
34. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम 320
35. भारतीयता पर अपसंस्कृति का दुष्प्रभाव 321
36. राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान
अथवा
स्वच्छ भारत मिशन/अभियान 322
37. बालक का बचपन बचाओ 322
38. मिलावट का रोग
अथवा
खाद्य-पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज 323
39. सूचना का अधिकार : लाभ व सीमाएँ 323
40. शिक्षा का अधिकार 324
41. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 324
42. राजस्थान के पर्यटन-स्थल
अथवा
राजस्थान में पर्यटन 325
43. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ 326
44. इन्टरनेट : ज्ञान की दुनिया
अथवा
इन्टरनेट की उपयोगिता

अथवा

विद्यार्थी–जीवन में इन्टरनेट की भूमिका (उपयोगिता) 326

45. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप

अथवा

मोबाइल फोन का प्रचलन एवं प्रभाव 327

46. जल–संरक्षण का महत्त्व

अथवा

जल–संरक्षण—आज की आवश्यकता

अथवा

जल ही जीवन है 328

47. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या

अथवा

कन्या–भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 328

48. राजस्थान में गहराता जल–संकट 329

49. संचार माध्यम व उसके बढ़ते प्रभाव 329

50. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव

अथवा

कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 330

51. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है

अथवा

विद्यार्थी–जीवन में अनुशासन का महत्त्व 331

52. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या

अथवा

बढ़ती महँगाई की मार 331

53. पर्यावरण प्रदूषण : कारण एवं निवारण

अथवा

बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 332

54. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप 332

55. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या

अथवा

भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य 333

56. मानव के लिए विज्ञान—वरदान या अभिशाप

अथवा

विज्ञान के बढ़ते कदम 334

57. मनोरंजन के आधुनिक साधन 334

58. राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की भूमिका 335

59. सबके लिए शिक्षा

अथवा

सर्वशिक्षा अभियान

अथवा

सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ 335

60. शिक्षित नारी : सुख-समृद्धिकारी 336

61. बढ़ती भौतिकता : घटते मानवीय मूल्य 337

62. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन

अथवा

वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य हानि 337

63. बेरोजगारी

अथवा

रोजगार के घटते साधन 338

64. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता

अथवा

नैतिक शिक्षा का महत्त्व 339

65. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

अथवा

समाचार-पत्रों का महत्त्व 339

काव्यांग-परिचय

(i) (अ) काव्य-गुण, (ब) काव्य-दोष 341-360

(ii) छन्द 360-374

(iii) अलंकार 374-386

❒❒❒

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2025

हिन्दी साहित्य

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
(4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
(5) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

1. **बहुविकल्पात्मक प्रश्न : (i से xv)** **[15×1=15]**

(i) ''सूरे पुलिस में न जाएगा। रो-धोकर चुप हो जाएगा'' 'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ में यह कथन किसने कहा?
(अ) भैरों (ब) जगधर (स) नायकराम (द) ठाकुरदीन

(ii) सूरदास राख में क्या खोज रहा था?
(अ) घड़ा (ब) ईंट (स) पोटली (द) लोटा

(iii) बिस्कोहर में किस पेड़ के फूल को सूँघने से बर्रे ततैया का डंक झड़ जाता है?
(अ) नीम (ब) बेर (स) गुडहल (द) आम

(iv) मालवा में औसत बारिश मानी जाती है—
(अ) 35 इंच (ब) 50 इंच (स) 60 इंच (द) 75 इंच

(v) समाचार पत्र 'जनसत्ता' का संपादन व उसे सामाजिक सरोकारों से जोड़ने वाले हैं—
(अ) विश्वनाथ (ब) प्रेमचन्द (स) रघुवीर सहाय (द) प्रभाष जोशी

(vi) रीतिकाल के 'रीतिमुक्त' या 'स्वच्छंद काव्यधारा' के प्रतिनिधि कवि हैं—
(अ) विद्यापति (ब) घनानंद (स) तुलसीदास (द) जायसी

(vii) 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' के रचनाकार हैं—
(अ) तुलसीदास (ब) जायसी (स) घनानंद (द) विद्यापति

(viii) 'भाग्यरेखा' व 'भटकती राख' के रचनाकार हैं—
(अ) रघुवीर सहाय (ब) केदारनाथ सिंह (स) भीष्म साहनी (द) निर्मल वर्मा

(ix) ''कल मैंने जाना कि वसंत आया। और यह कैलेण्डर से मालूम था'' पंक्ति में भाव प्रकट हुआ है—
(अ) सहानुभूति (ब) दया (स) व्यंग्य (द) क्रोध

(x) 'ढेले चुन लो' लघु निबंध में लेखक ने किस पर चोट की है?
(अ) शिक्षा पद्धति पर (ब) लोक विश्वासों के नाम पर अंधविश्वासों पर
(स) अशुद्ध भाषा प्रयोग करने वाले कवि-लेखकों पर
(द) भ्रष्टाचार पर

(xi) विद्यापति के पद में विरहिणी अपनी दोनों आँखें क्यों बंद कर लेती हैं?
(अ) पुष्पित जंगल देखकर (ब) कोयल देखकर
(स) प्रियतम को देखकर (द) हिंसक जीवों को देखकर

(xii) कहानी में वर्तमान से अतीत में जाना कौनसी तकनीक कहलाती है?
(अ) फ्लैशबैक (ब) फ्लैश फोरवर्ड (स) उलटा पिरामिड (द) विवरणात्मक शैली

(xiii) भरतमुनि के काव्यशास्त्रानुसार नाटक के हरेक अंक की अवधि कम से कम होनी चाहिए—
(अ) 20 मिनट (ब) 48 मिनट (स) 70 मिनट (द) 90 मिनट

(xiv) 'जब तक खबर के दृश्य नहीं आते एंकर, दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएँ पहुँचाता है।' इसे कहते हैं—
(अ) एंकर - विजुअल (ब) फोन इन (स) एंकर - पैकेज (द) ड्राई - एंकर

(xv) 'जन संचार' के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम है—
(अ) रेडियो (ब) टेलीविजन (स) समाचार पत्र (द) इंटरनेट पत्रकारिता

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– (i से vi) **[6×1=6]**

(i) ''मंद-मंद मुरली बजावत अधर धरे, मंद-मंद निकस्यो मुकुन्द मधु-बन ते।'' पंक्तियों में .... गुण है।

(ii) जहाँ व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध शब्द का प्रयोग हो वहाँ .... दोष होता है।

(iii) प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण एवं रगण के क्रम में 12 वर्ण विद्यमान हो, वहाँ .... छंद होता है।

(iv) छप्पय छंद की अंतिम दो पंक्तियाँ .... छंद की होती हैं।

(v) चुपचाप खड़ी थी वृक्ष-पांत।
सुनती जैसे कुछ निज बात॥
पंक्तियों में .... अलंकार है।

(vi) कारण के उपस्थित होने पर भी जब कार्य का न होना वर्णित किया जाये, तब .... अलंकार होता है।

3. दिए गए अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— **[6×1=6]**

हमारी परंपरा महिमामयी, उत्तराधिकार विपुल और संस्कार उज्ज्वल हैं। हमारे अनजान में भी ये बातें हमें एक खास दिशा में सोचने की प्रेरणा देती है। यह जरूर है कि परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। उपकरण नये हो गये हैं और उलझनों की मात्रा भी बहुत बढ़ गयी है, पर मूल समस्याएँ बहुत अधिक नहीं बदली हैं। भारतीय चित्त जो आज भी 'अधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है, वह हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल है। वह 'स्व' के बंधन को आसानी से नहीं छोड़ सकता। अपने आप पर अपने-आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता है। पुराने का 'मोह' सब समय वांछनीय ही नहीं होता। मरे बच्चे को गोद में दबाये रहने वाली 'बंदरिया' मनुष्य का आदर्श नहीं बन सकती। कालिदास ने कहा था कि सब पुराने अच्छे नहीं होते, सब नए खराब ही नहीं होते। भले लोग दोनों की जाँच कर लेते हैं, जो हितकर होता है, उसे ग्रहण करते हैं, और मूढ़ लोग दूसरों के इशारे पर भटकते रहते हैं।

(i) गद्यांश का शीर्षक है।
(ii) भारतीय चित्त किस रूप में सोचता है?
(iii) हमारी संस्कृति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता क्या है?
(iv) भले व विवेकी लोग क्या करते हैं?
(v) मूर्ख लोग कौन होते हैं?
(vi) 'बंदरिया' हमारी आदर्श क्यों नहीं हो सकती है?

4. दिए गए अपठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए— **[6×1=6]**

कौन, तुम रूपसि कौन?
व्योम से उतर रही चुपचाप,
छिपी निज छाया छवि में आप,
सुनहला फैला केश - कलाप,
मधुर, मंथर मृदु, मौन!
मूँद अधरों में मधुपालाप,
पलक में निमिष, पदों में चाप,

भाव संकुल बंकिम भ्रू-चाप,
मौन केवल तुम मौन!

(i) प्रस्तुत पद्यांश का शीर्षक लिखिए।
(ii) रूपसि कहाँ से उतर रही है?
(iii) रूपसि के केश कैसे हैं?
(iv) रूपसि कहाँ छिपी हुई है?
(v) रूपसि की वाणी कैसी है?
(vi) पद्यांश की भाषा की कोई विशेषता लिखिए।

खण्ड-ब

निर्देश : प्रश्न संख्या 5 से 15 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम शब्द सीमा 40 शब्द हैं।

5. शुक्लजी के बाल मन में 'भारतेंदुजी' के संबंध में किस प्रकार के भाव व छवि बसी हुई थी? [2]
6. 'ये लोग आधुनिक भारत के नए 'शरणार्थी' हैं।' ऐसा लेखक ने किनके लिए और क्यों कहा है? [2]
7. ''दु:ख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!''
प्रस्तुत पंक्तियों में निराला के जीवन के कौनसे पहलू का पता चलता है? लिखिए। [2]
8. ''यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाउ।
मकु तेहि मारग होइ परौं, कंत धरै जहँ पाउ॥''
प्रस्तुत पंक्तियों में विरहिणी की क्या इच्छा व्यक्त हुई है? लिखिए। [2]
9. ''अंधापन ही क्या थोड़ी बिपत थी'' ऐसा सूरदास ने क्यों कहा? स्पष्ट कीजिए। [2]
10. ''क्या पशु माताएँ भी ममत्त्व का सुख दे पाती होंगी?'' 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर अपने विचार प्रकट कीजिए। [2]
11. 'अन्योक्ति' अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए। [2]
12. पत्रकार को अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य कोई चार बातें लिखिए। [2]
13. कहानी के प्रमुख तत्त्व कौन-कौन से होते हैं? [2]
14. 'रेडियो' की वे खूबियाँ जो उसे अन्य माध्यमों से विशिष्ट बनाती हैं। लिखिए। [2]
15. 'जयशंकर प्रसाद' अथवा 'हजारी प्रसाद द्विवेदी' का साहित्यिक परिचय लिखिए। [2]

खण्ड-स

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

16. 'यह दीप अकेला' कविता में कवि दीप को पंक्ति को देना क्यों चाहते हैं? आशय स्पष्ट कीजिए। [3]

अथवा

'बनारस' कविता के आधार पर बनारस की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

17. 'शेर' लघुकथा के माध्यम से लेखक ने व्यवस्था पर किस प्रकार प्रहार किया है? विस्तार से समझाइए। [3]

अथवा

''मुझे भूख नहीं है'', ''नानी चलो खा लें मुझे भूख लगी है।'' संभव के इन दोनों विरोधाभासी कथनों के आधार पर उसकी मनोदशा का वर्णन कीजिए।

18. सूरदास की झोंपड़ी नहीं उसके सपनों की चिता जल रही थी। पंक्ति को विस्तारपूर्वक समझाइए। [3]

अथवा

मालवा प्रदेश की नदियों व मालवा के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

खण्ड-द

19. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। [5]

दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परार्थ नहीं है, परमार्थ नहीं है – है केवल प्रचंड स्वार्थ। भीतर की जिजीविषा – जीते रहने की प्रचंड इच्छा ही – अगर बड़ी बात हो तो फिर यह सारी बड़ी-बड़ी बोलियाँ, जिनके

बल पर दल बनाए जाते हैं, शत्रुमर्दन का अभिनय किया जाता है, देशोद्धार का नारा लगाया जाता है, साहित्य और कला की महिमा गाई जाती है, झूठ है। इसके द्वारा कोई-न-कोई अपना बड़ा स्वार्थ सिद्ध करता है। लेकिन अंतरतर से कोई कह रहा है, ऐसा सोचना गलत ढंग से सोचना है। स्वार्थ से भी बड़ी कोई-न-कोई बात अवश्य है, जिजीविषा से भी प्रचंड कोई-न-कोई शक्ति अवश्य है। क्या है?

अथवा

"जी नहीं, कोई संवाद नहीं।........ऐसे बड़ी बहुरिया ने कहा है कि यदि छुट्टी हुई तो दशहरा के समय गंगाजी के मेले में आकर माँ से भेंट-मुलाकात कर जाऊँगी।" बूढ़ी माता चुप रही। हरगोबिन बोला, "छुट्टी कैसे मिले? सारी गृहस्थी बड़ी बहुरिया के ऊपर ही है।"

बूढ़ी माता बोली, "मैं तो बबुआ से कह रही थी कि जाकर दीदी को लिवा लाओ, यहीं रहेगी। वहाँ अब क्या रह गया है? जमीन - जायदाद तो सब चली ही गई। तीनों देवर अब शहर में जाकर बस गए हैं। कोई खोज-खबर भी नहीं लेते। मेरी बेटी अकेली.........।"

20. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए— [5]

तोड़ो तोड़ो तोड़ो
ये ऊसर बंजर तोड़ो
ये चरती परती तोड़ो
सब खेत बनाकर छोड़ो
मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को?
गोड़ो गोड़ो गोड़ो।

अथवा

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिस पारा॥
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनी समुझि साधु सुचि को भा॥
मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनन कोटि कुचाली॥
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली॥
सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू॥
बिनु समुझें निज अध परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू॥
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेंहि भल मोरा॥
गुर गोसाइँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू॥

21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लिखिए— [6]

(अ) स्वदेशी का महत्त्व
(ब) योग का महत्त्व
(स) राष्ट्रनिर्माण में युवाओं की भूमिका
(द) भारत का गौरवशाली इतिहास।

❑❑❑

हिन्दी साहित्य–कक्षा–12
अन्तरा भाग 2 (पद्य खण्ड)

1. जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय–आधुनिक छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई. में काशी में हुआ था। प्रसादजी का जन्म तो बहुत सम्पन्न परिवार में हुआ था, लेकिन बदलते काल चक्र ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। बारह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया। तत्पश्चात् दो–तीन वर्ष में ही माता का स्वर्गवास हो गया और जब प्रसाद सत्रह वर्ष के थे, तब बड़े भाई शंभूरतन की भी मौत हो गई। अल्पायु में ही ऋणग्रस्त परिवार का सारा दायित्व प्रसाद के सिर पर आ गया था। इन अवसादों और वेदनाओं का प्रभाव प्रसाद के जीवन व साहित्य दोनों पर पड़ा।

प्रसादजी की विद्यालयी शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक ही हो पाई थी, किन्तु स्वाध्याय द्वारा उन्होंने संस्कृत, पालि, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं तथा साहित्य का गहन अध्ययन किया। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र और पुरातत्त्व के प्रकांड विद्वान् प्रसाद अत्यन्त सौम्य, शांत एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्तित्व के धनी थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद मूलतः कवि थे; लेकिन उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध आदि विविध साहित्यिक गद्य विधाओं में उच्च कोटि की रचनाओं का सृजन किया। ये भारतीय संस्कृति और जीवन–मूल्यों से प्रभावित एवं देश–प्रेम से मण्डित थे। इनके काव्य में आध्यात्मिकता, रहस्यवाद, राष्ट्रीय जागरण की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है। प्रसाद को हिन्दी साहित्य में छायावाद का उन्नायक माना जाता है। इस दृष्टि से इनका 'कामायनी' महाकाव्य कालजयी सर्वश्रेष्ठ रचना है। इनका निधन सन् 1937 में हुआ।

कठिन शब्दार्थ एवं सप्रसंग व्याख्याएँ

देवसेना का गीत

(1)

आह! वेदना मिली विदाई!
मैंने भ्रम-वश जीवन संचित,
मधुकरियों की भीख लुटाई।

कठिन शब्दार्थ–वेदना = दु:ख, कष्ट–पीड़ा। **संचित** = एकत्रित। **मधुकरियों** = भिक्षा।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' के 'देवसेना का गीत' से अवतरित किया गया है। इसमें मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन देवसेना की निराशा एवं वेदना की अभिव्यक्ति है।

व्याख्या–देवसेना सोचती है कि अब जीवन के अन्तिम पड़ाव पर भी मुझे पीड़ा ही मिली। अर्थात् जीवन से विदा लेते समय भी मुझे दु:खों से छुटकारा नहीं मिला। अपने यौवन में किये गए क्रियाकलापों को ही मैंने कर्म माना जबकि आज लगता है कि मैंने भिक्षा माँगने का ही कार्य किया है और कुछ नहीं किया है। अतीत की वे सभी मधुर यादें देवसेना को कचोट रही हैं और उन्हें अतिशय वेदना की अनुभूति हो रही है।

विशेष–(i) कवि ने देवसेना के माध्यम से अपनी वेदना व्यक्त की है।

(ii) तत्सम शब्दावली एवं गेयता द्रष्टव्य है। करुण रस की प्रधानता है।